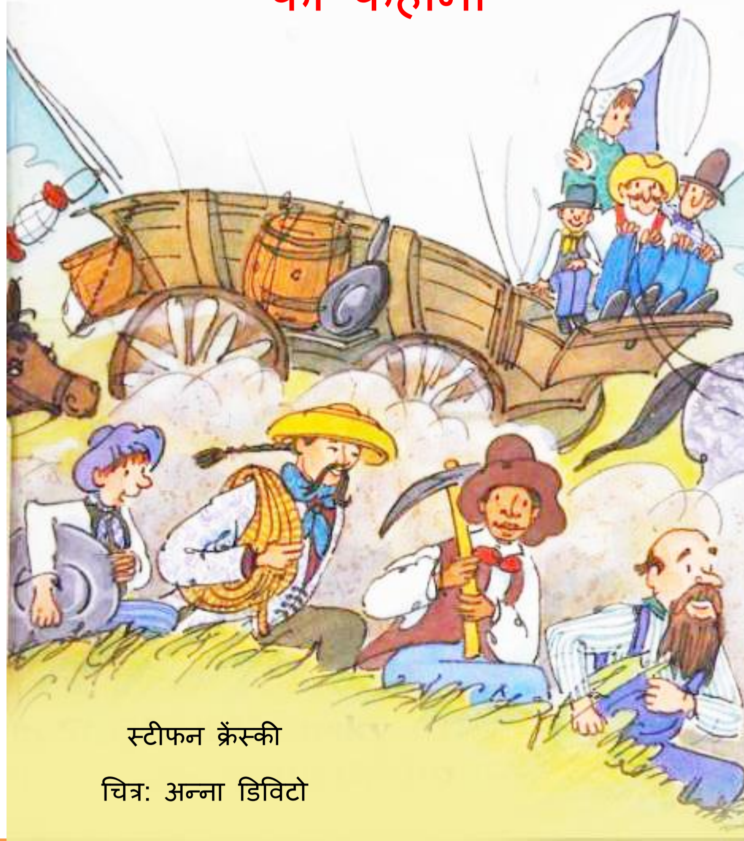
सोने की चमक

कैलिफ़ोर्निया गोल्ड-रश

की कहानी



स्टीफन क्रैंस्की

चित्र: अन्ना डिविटो

सोने की चमक

कैलिफ़ोर्निया गोल्ड-रश

की कहानी



सोने की चमक

कैलिफ़ोर्निया गोल्ड-रश

की कहानी

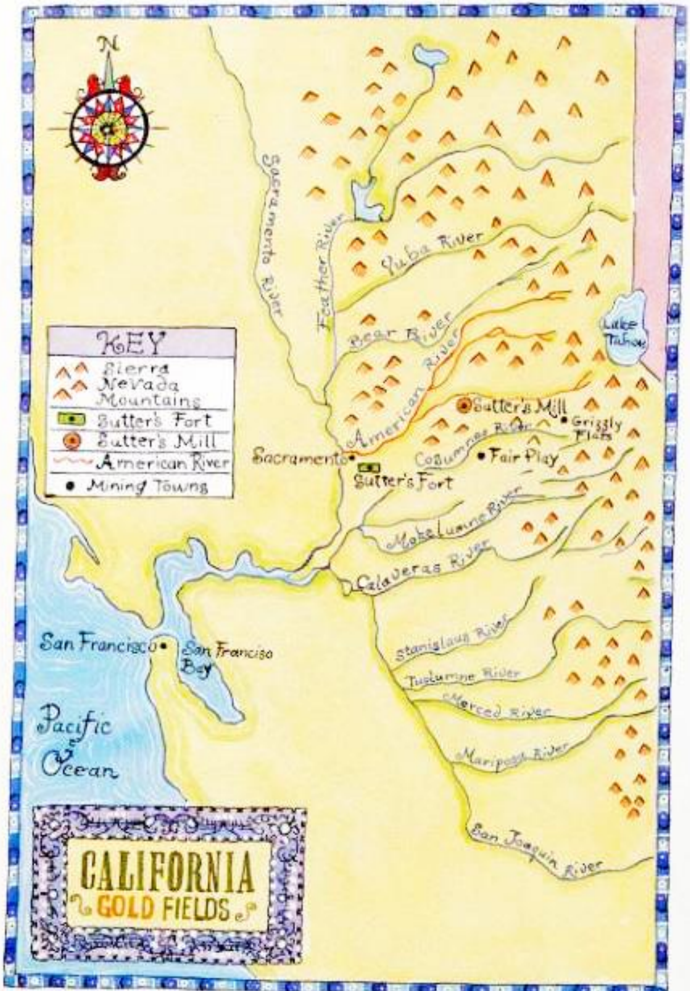


मार्शल



सटर







1

खबर तेज़ी से फ़ैली

सोना!

खबर बहुत बड़ी थी अगर वो सच थी - लेकिन क्या वो सच थी? सैन फ्रांसिस्को एक धीमी गति वाला छोटा शहर था, लेकिन वहां के लोगों ने इन कहानियों को पहले भी सुना था. और जब पहाड़ियों में सोने की खोज की चर्चा होती तो हमेशा बहुत सारी अफवाहें फैलतीं थीं, और अक्सर लोग सरासर झूठ बोलते थे.

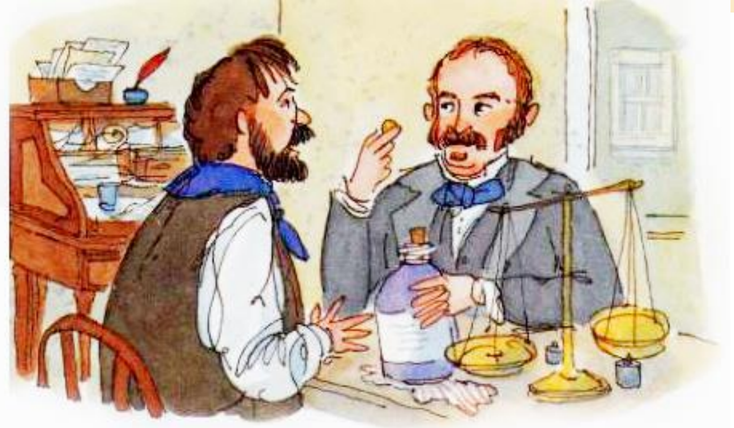
इस नवीनतम कहानी के पीछे के तथ्य काफी स्पष्ट थे. कहानी एक बढ़ई, जेम्स मार्शल के साथ शुरु हुई. वो पूर्व में, सौ मील की दूरी पर अमेरिकन नदी पर एक आरा मशीन लगाने में मदद कर रहा था.

मार्शल बहुत कम पढ़ा-लिखा था, लेकिन उसकी निगाह बड़ी तेज़ थी और उसे कोई मूर्ख नहीं बना सकता था. 24 जनवरी 1848 को वह नदी के तल में खुदाई कर रहा था. वहाँ उसने एक चमकीली पीला पत्थर देखा, जो उसके अंगूठे से ज़्यादा बड़ा नहीं था.



मार्शल ने उसे सोना या फिर लोहे की पाइराइट समझा, जो सोने जैसी ही दिखती थी लेकिन जल्दी टूटती थी. उसने धातु पर हथौड़े से प्रहार किया. वो चपटा हुआ लेकिन टूटा नहीं - जो एक अच्छा संकेत था. लेकिन मार्शल एक व्यस्त व्यक्ति था. उसने उस पत्थर को अपनी टोपी के अंदर रख लिया और काम पर वापस चला गया.





बाद में, वह अपने मालिक, जॉन ए. सटर से मिलने के लिए सटर के किले में गया. स्विट्ज़रलैंड में जन्मा सटर, एक किसान, एक व्यापारी और खालों का जानवर ट्रैपर था. लेकिन वो अपने धंधे में कभी भी बहुत सफल नहीं हुआ था.

सटर और मार्शल ने पत्थर की सावधानीपूर्वक जांच की. उन्होंने यह देखने के लिए उसे काटा कि क्या वो सोने की तरह नरम था. उन्होंने यह देखने के लिए उसपर तेजाब लगाया कि क्या उसकी चमक फीकी पड़ेगी. पर पत्थर की चमक बरकरार रही. फिर उन्होंने उसे चाँदी और अन्य चीज़ों से तौला, जो सोने से हल्की होती थीं.

उस पत्थर ने हर परीक्षा पास की.

वो सोना था, एकदम खरा!

सटर ने मार्शल को सोने की खोज को, एकदम गुप्त रखने को कहा. उससे शायद बहुत अधिक हासिल नहीं होता, लेकिन फिर भी सोने की खबर, मज़दूरों का ध्यान उनके काम से विचलित कर सकती थी.

लेकिन ऐसे रहस्य ज़्यादा समय तक छिपते नहीं हैं. सटर के आदमियों को जल्द ही मार्शल की खोज के बारे में पता चल गया. फिर रविवार, छुट्टी वाले दिन, लोग सोने की डलियों और सोने की धूल तलाशने लगे. कुछ मज़दूरों ने एक घंटे में पर्याप्त सोना एकत्र करके एक महीने के वेतन के बराबर कमाई की.





1848 के वसंत तक, तमाम किस्से-कहानियां सैन फ्रांसिस्को तक पहुंच रही थीं. वहां तब 800 सिर्फ लोग रहते थे. वहां पर खनिक, चाकुओं से सोना खुरचने के बारे में डींग मार रहे थे. एक साथी को, अपने तंबू के खंभे के लिए छेद खोदते समय 50 डॉलर की सोने की डली मिली!

इन खबरों में कुछ सच्चाई ज़रूर होगी? बहुत से लोगों ने ऐसा ही सोचा, और उससे सोने का बुखार तेज़ी से फ़ैला. वकीलों ने अपने मुवक्किलों को छोड़ दिया और सैनिकों ने अपने पदों को छोड़ दिया.

स्कूल के एकमात्र शिक्षक के भाग जाने के बाद एक स्कूल बंद हो गया. इसके बाद मेयर भी गायब हो गया. कोई भी शेरिफ से शिकायत नहीं कर सकता था क्योंकि वो भी सोने को तलाशने चला गया था.

जून के अंत तक, सैन फ्रांसिस्को लगभग एक भुतहा शहर बन गया था. स्टोर खाली थे. दरवाजे हवा में लहरा रहा थे. कुत्ते सड़कों और फुटपाथों पर अकेले केवल अपनी परछाई लिए घूम रहे थे.

ऐसा लगता था जैसे हर कोई पहाड़ियों में सोना खोजने के लिए निकल पड़ा था.





2

पश्चिम की ओर पलायन

1848 की गर्मियों के दौरान, यह खबर धीरे-धीरे पूर्व की ओर फैली. खबर घोड़ों की पीठ पर सवार होकर, बड़े मैदान के पार फ़ैली. खबर भांप की नावों द्वारा मिसिसिपी नदी के पार पहुंची. और जहाजों ने उस खबर को, पूरे दक्षिण अमेरिका में फैला दिया.

शुरू में पूर्व के लोग उस खबर से ज्यादा प्रभावित नहीं हुए. किसी को उन कहानियों की सच्चाई पर यकीन नहीं हुआ. उस खबर में लोगों को कोई दम नहीं लगा और वैसे भी कैलीफोर्निया बहुत दूर था.

अधिकांश अमेरिकियों को कैलिफोर्निया के बारे में ज्यादा जानकारी भी नहीं थी. मैक्सिकन युद्ध की समाप्ति के बाद से वो क्षेत्र केवल कुछ महीनों के लिए ही संयुक्त राज्य का हिस्सा रहा था. वहां की आबादी बहुत कम थी और बिखरी हुई थी - वो देशी जनजातियों, मैक्सिकन सेटलर्स और कुछ अमेरिकी पायनियर्स का मिश्रण थी.



पर बहुत जल्द ही कैलिफ़ोर्निया, हर किसी के दिमाग में भर गया था. नवंबर तक, न्यूयॉर्क शहर के समाचार पत्र, सोने की कहानियों से भरे हुए थे. उनमें सोने की सड़कों और सेब जितनी बड़ी सोने की डलियों के जमीन पर पड़े होने का जिक्र था.

फिर दिसंबर में, राष्ट्रपति जेम्स पोल्क ने सोने की हड़ताल के बारे में कांग्रेस से बात की. सेना और सरकारी अधिकारियों की रिपोर्टों के आधार पर, उनके भाषण में "व्यापक" सोने की खानों का उल्लेख था. "सोना इतनी तादाद में है .." उन्होंने कहा, "कि शायद ही कोई उसपर विश्वास करे...

इसने लोगों के लिए उस खबर को पक्का किया. जो लोग अखबारों पर विश्वास नहीं करते थे, वे अपने राष्ट्रपति पर ज़रूर भरोसा करते थे. राष्ट्रपति को सच ज़रूर पता होगा.

अब कैलिफोर्निया सब लोगों के लिए जाने की जगह थी. 1848 में, एक स्टोर क्लर्क या खेत मज़दूर प्रति सप्ताह 7 डॉलर कमा पाता था. सोने का खनिक नाश्ते और दोपहर के भोजन के बीच में उससे चार-गुना ज्यादा कमा सकता था.

सब कुछ इतना आसान लग रहा था. कैलिफ़ोर्निया में कुछ महीने बिताएं और फिर अपनी जेबों में सोना भरकर वापिस घर लौटकर आएं. ऐसा सपना देखने वाले हजारों लोग थे और उनमें से ज्यादातर युवा थे, हालांकि उनमें एक नब्बे वर्षीय क्रांतिकारी युद्ध के दिग्गज भी था. कुछ लोगों ने अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ यात्रा की. पर कुछ लोगों ने वहां बहुत लंबे समय तक रहने की योजना नहीं बनाई.



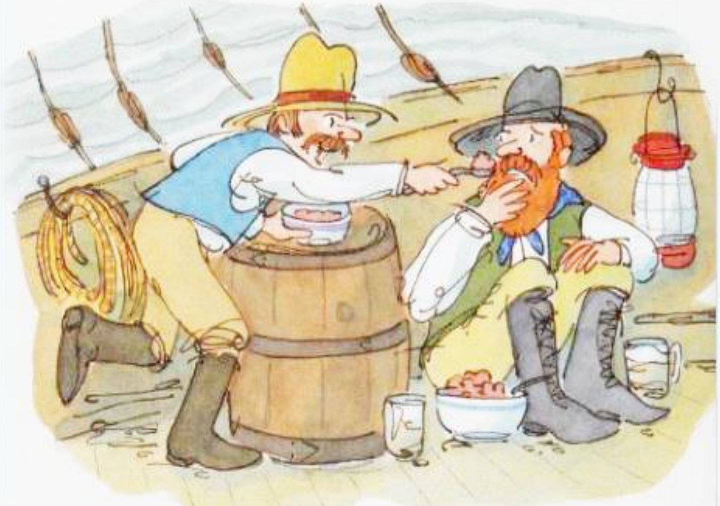
पर सबसे पहले खनिकों को कैलिफोर्निया तक पहुंचना था. एक आविष्कारक ने फ्लाइंग मशीन द्वारा यात्रा की पेशकश की. लेकिन उसका गुब्बारे वाला जहाज, कभी जमीन से ऊपर ही नहीं उठ पाया.

इसलिए हवा की बजाए, यात्री जमीन या समुद्र से ही गए.

पूर्वी लोगों का पसंदीदा समुद्री मार्ग, दक्षिण अमेरिका की परिक्रमा करके फिर सैन फ्रांसिस्को तक जाना था. सैकड़ों जहाजों और नौकाओं ने वो यात्रा पूरी की. 15,000 मील की इस यात्रा में छह महीने से एक साल तक का समय लगता था.

अधिकांश जहाज तंग होते थे और उनमें बहुत भीड़ होती थी. अक्सर एक कमरे में इतने लोग भरे होते थे कि उन्हें खड़े-खड़े ही सोना पड़ता था. कभी-कभी यात्री एक ही शहर के होते थे और वे एक-दूसरे को जानते थे. पर अक्सर वहां हर कोई अजनबी होता था, इसलिए लोग एक-दूसरे से सावधान रहते थे.

इतनी लंबी यात्रा में, कई यात्री समुद्र में बीमार पड़ जाते थे और खाना नहीं खा पाते थे. बाकी भी ज्यादा भाग्यशाली नहीं थे. जहाज़ पर भोजन के अजीब-अजीब नाम होते थे, जैसे "लोबस्काउस" और "हुशमा-ग्रंडी". भोजन में नमक लगा मांस और फफूंदीदार रोटी ही मिलती थी - जो बड़ी अजीब बात थी.



मध्य-पश्चिम के लोग कैलिफोर्निया जाने के लिए भूमि-मार्ग पसंद करते थे. मिसौरी से यात्रा वैगन ट्रेन द्वारा 1,800 मील की दूरी थी - हालाँकि एक आदमी ने अपने सामान के साथ एक व्हीलब्रो से वो दूरी तय की. एक सामान्य वैगन दस फीट लंबी, चार फीट चौड़ी होती थी और वो बैलों या खच्चरों द्वारा खींची जाती थी. वैगन-ट्रेन में सिर्फ कुछ वैगन या कई दर्जन वैगन हो सकती थीं.

वैगन मास्टर, ट्रेन का नेतृत्व करता था और रास्ते में किसी भी समस्या का समाधान करता था.

एक यात्री ने लिखा कि उसका पसंदीदा भोजन था - काले रंग का शीरा और उसके साथ कुछ भी, क्योंकि शीरे से फफूंद छिप जाती थी और शीरा, कीड़ों को मार डालता था.

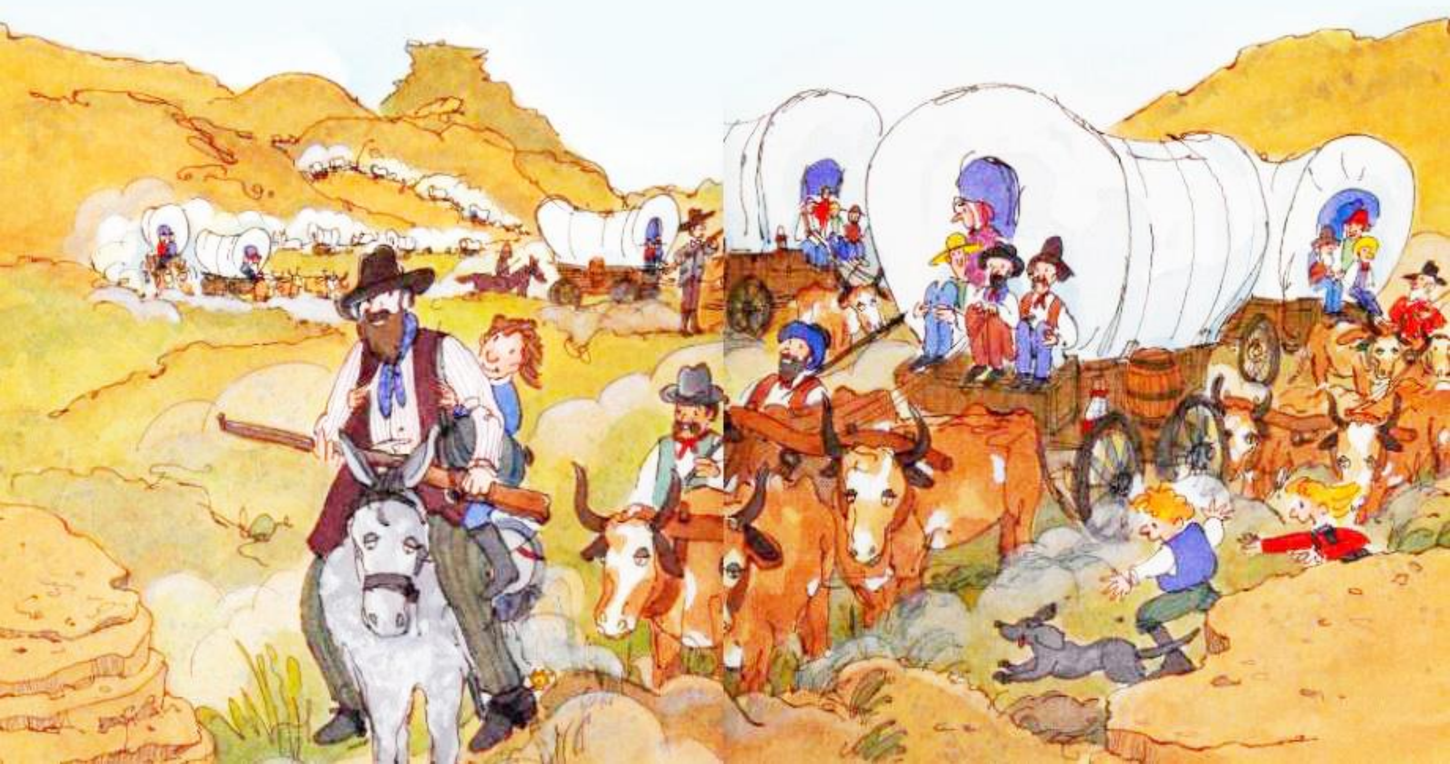
अंत में अधिकांश समुद्री यात्री थके, बीमार, भूखे, और यात्रा से ऊब चुके होते थे, और उन्हें नहाने की सख्त आवश्यकता होती थी. कुछ ने यात्रा के लिए अपनी पूरी बचत, दांव पर लगा दी थी. कईयों की तबीयत खराब थी. लेकिन सैन फ्रांसिस्को खाड़ी की पहली नजर के बाद लगभग सभी यात्री अपने दुखों और कठिनाइयों को भूल जाते थे.



वैगन मास्टर लोगों को काम भी देता था - जलाऊ लकड़ी या पानी इकट्ठा करना, नज़र रखना, या खाना बनाना. एक वैगन ट्रेन ने अपने सदस्यों को हर हफ्ते अपने अंडरवियर बदलने और नहाने के लिए तीन पाउंड साबुन भी ले जाने को कहा.

पगडंडी पर दिन लंबे, धूल भरे और गर्म होते थे. सवारी ऊबड़-खाबड़ होती थी.

यात्री, खुद को साँपों, भालुओं और स्थानीय इंडियन लोगों से बचाने के लिए साथ में हथियार लेते थे. लेकिन अधिक लोग बंदूकों की दुर्घटनाओं से मारे जाते, न कि असली लड़ाइयों में.



बहुत लोगों की मौत हैजे से होती थी, जो पानी में पाए जाने वाले बैक्टीरिया से होने वाली एक बीमारी थी. वो बैक्टीरिया नदियों, कुओं, यहां तक कि पानी के बर्तनों से होकर बहुत तेजी से फैलता था. एक आदमी को सुबह बुखार होता और वो सूर्यास्त तक मर जाता था. 1849 के वसंत और ग्रीष्मकाल में, हैजे ने सोना चाहने वाले हजारों लोगों की जान ली.

कैलिफ़ोर्निया पहुँचने के तीसरे मार्ग में सबसे कम समय लगता था. लेकिन यह चीज़ों के अच्छी तरह से चलने पर निर्भर करता था. यात्री, मध्य अमेरिका के लिए नाव से सवारी करते, फिर पनामा तक की साठ मील की दूरी पैदल तय करते, और फिर पनामा से कैलिफोर्निया तक एक दूसरी नाव की सवारी करते थे.

समुद्री यात्राओं में बहुत कम खतरे होते थे. ज़मीन पर चलकर यात्रा करना, सबसे मुश्किल होता था. पनामा के जंगल गर्म होते थे और वे मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों से भरे होते थे, जो एक घातक बीमारी थी.

जंगल, राजहंसों (फ्लेमिंगो), तोते और बंदरों का घर थे. लेकिन अधिकांश यात्री इतनी जल्दी में होते थे कि वो उन्हें नोटिस ही नहीं करते थे.



चाहे वे नाव से आए हों या वैगन ट्रेन से, 1849 में लगभग 80,000 लोग कैलिफ़ोर्निया पहुँचे. ये "फोर्टी-नाइनर्स", वो आशावादी खनिक थे जो अपने जीवन की सबसे खराब यात्रा से बच निकले थे. अब वे मुस्कुरा सकते थे और एक-दूसरे से हाथ मिला सकते थे. अब, उन्होंने सोचा, कि उनकी चिंताएं खत्म हो गई थीं.



3

खनन जीवन

सोना चाहने वालों में से अधिकांश बिना सोचे-समझे कैलिफोर्निया भागकर गए थे. कुछ लोग अपने घर की सारी सुख-सुविधाएँ लेकर आए: लकड़ी की कुर्सियाँ और मेजें, फैंसी बर्तन, यहाँ तक कि क्रिस्टल लैंप भी. कुछ अधिक व्यावहारिक थे. वे रेनकोट, भारी जूते, कैनवास तंबू और खाना पकाने के बर्तन लाए थे.

लेकिन लगभग उनमें से किसी को यह नहीं पता था कि सोने का कैसे खनन किया जाता था.

और किसी को उसकी परवाह भी नहीं थी. हर कोई अभी भी उन सफलता की कहानियों से चकाचौंध था जो उसने सुनी थीं. एक खनिक एक पहाड़ी से नीचे गिर गया, उसने तल की गंदगी में खोदा, और फिर वो मालामाल हो गया. दूसरे ने अपने खच्चर को, घास के साथ-साथ सोने के पत्थरों को भी खींचते हुए देखा.

1849 में मिली, सबसे बड़ी सोने की डली का वजन 161 पाउंड था और उसकी कीमत 38,000 डॉलर थी, इसलिए कुछ भी संभव लग रहा था.

समझदार यात्रियों ने सैन फ्रांसिस्को में बहुत कम समय बिताया, जहां एक छोटा सा होटल का कमरा 1800 डॉलर प्रति माह के किराए पर मिलता था, जो पूर्व में एक नए घर की कीमत होती थी. यहां एक बिल्ली की कीमत भी 8 से 12 डॉलर थी.

इसके बजाए, आशावादी खनिक, पहाड़ियों तक तीन-दिवसीय नौका की सवारी करते, जहां वे पहाड़ी नदियों में और उनके आसपास सोने की तलाश शुरू करते. एक नवागंतुक, एक अनुभवी खनिक को, एक पेड़ की छाल से एक डली "खींच" देखकर चकित रह गया. वो अपनी किस्मत आजमाने के लिए पास के एक देवदार पेड़ के ऊपर आधा चढ़ गया जब उसने नीचे खड़े लोगों को अपने ऊपर हंसते हुए देखा.

जब कोई खनिक सोने का असली खनन शुरू करता, तो उसे सबसे पहले एक काम करना होता था - अपना दावा पेश करना. ऐसा करने के लिए, वो नदी के किनारे की भूमि के एक टुकड़े के कोनों पर, चार खूंटे जमीन में गाड़ देता था.

अपना दावा कायम रखने के लिए, उसे उस ज़मीन पर काम करते रहना पड़ता था. एक सप्ताह तक काम न करने पर उसका दावा निरस्त हो जाता था. अगर वो खनिक बीमार न हो तो फिर कोई अन्य खनिक, उस पर काम कर सकता था.



एक खनिक का दिन सुबह को जल्दी शुरू होता था. सुबह को वो कपड़े बदलने में समय बर्बाद नहीं करता था क्योंकि वो अपने कपड़े कभी बदलता ही नहीं था. सूअर के मांस, बिस्किट और स्ट्रांग कॉफी के त्वरित भोजन के बाद, वो नदी की ओर चल पड़ता था.

अगर खनिक अकेला काम करता तो ठंड से बचने के लिए वो ऊँचे जूते पहनकर नदी में खड़ा हो जाता था. जैसे-जैसे पानी बहता, वो रेत और पानी को एक धातु के बर्तन (पैन) में उठाता, जो अक्सर तवे के आकार से दोगुना होता था. फिर वो बर्तन को चारों ओर तेज़ी से घुमाता था.

बीच में भारी सोना या सोने की धूल छोड़कर, रेत या गंदगी बर्तन के किनारों से बह जाती थी. फिर खनिक बर्तन को खाली कर देता और फिर रेत और पानी का दूसरा भार उठाता था.

कुछ खनिक टीमों में काम करते थे. अगर वे "रॉकर" या "लॉन्ग टॉम" का इस्तेमाल करते तो तीन आदमी, एक की तुलना में अधिक तेजी से रेत और गाद में खनन कर सकते थे.

"रॉकर" लगभग तीन फीट लंबा एक लकड़ी का बक्सा होता था जो एक झूलने वाले पालने में रखा होता था. इसमें सोने से गंदगी को अलग करने के लिए चलनियां होती थीं. एक आदमी मिट्टी को फावड़ा से डालता था, दूसरा पानी डालता था और तीसरा पालने को हिलाता था.

"लॉन्ग टॉम" आठ से चौदह फीट लंबा एक बड़ा बॉक्स होता था. इसमें चलनी, स्क्रीन और क्लीट भी होते थे. लेकिन वो हिलता नहीं था. इसके बजाए, एक लॉन्ग टॉम को बहते पानी की एक स्थिर धारा की आवश्यकता होती थी.



खोदना, तवे को हिलाना और घुमाना थका देने वाला काम था, और नदी का पानी दर्दनाक रूप से ठंडा होता था. कई जगहों पर मच्छर इतने मोटे थे कि ऐसा कहा जाता था कि अगर खनिक ध्यान न दे तो मच्छर उसके सिर की टोपी उठा सकते थे.

सूर्यास्त के बाद, खनिक अपने तंबू में वापस आते या तारों के नीचे ही सो जाते थे. कुछ बोर्डिंग हाउसों में खनिकों को बिना तकिए या चादर के कम ऊंचाई की चारपाइयों पर लकड़ी के ढेर की तरह सोने दिया जाता था.

रविवार को खनिक आराम करते थे. वे नहाते-धोते और अपने सबसे अच्छे कपड़े पहनते थे. यहां तक कि वे अपनी दाढ़ी में भी कंघी करते थे, और उन्हें चोटी में बांधते या पूंछ में लपेटते थे. एक खनिक अपनी दाढ़ी को आधा में बांटकर अपनी ठुड्डी के नीचे एक "बो" बांधता था.





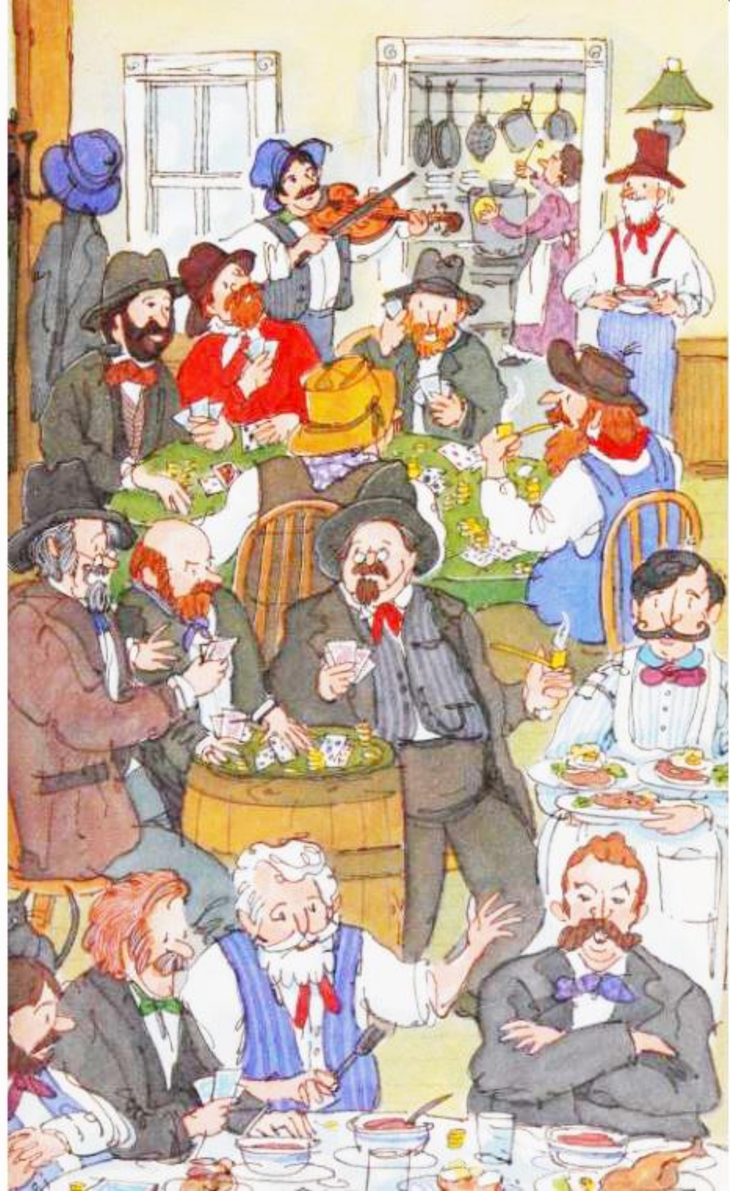
यदि पर्याप्त संख्या में खनिक कुछ महीनों के लिए एक स्थान पर बस जाते, तो वे उसे एक शहर बुलाते और उसे एक नाम देते - जैसे फेयर प्ले बेडबग, या ग्रिजली फ्लैट्स. जल्द ही वहां कोई जनरल स्टोर (दुकान) खोलता, और कोई सैलून.

हालांकि वहां दुकान चलाना, खनन जितना रोमांचक नहीं था, लेकिन वो धंधा बहुत अधिक भरोसेमंद था. पहाड़ियों में ज्यादातर सामानों का कारोबार "सोने की धूल" में किया जाता था. एक चुटकी धूल, एक डॉलर जितनी होती थी, लेकिन सभी की चुटकी एक जैसी नहीं होती थीं.

कई स्टोरकीपर 40 डॉलर में शर्ट बेचकर और 20 डॉलर में जूते बेचकर अमीर हो गए. उन चीज़ों की कीमत पूर्व की तुलना में दस गुना अधिक थी. चीनी, आलू और सेब 2 डॉलर प्रति पौंड थे, जो सामान्य कीमत से पचास गुना अधिक थे. एक भूखे खनिक के लिए जो इंतजार नहीं कर सकता था, ब्रेड के एक टुकड़े की कीमत 1 डॉलर होती थी. मक्खन वाली डबलरोटी की कीमत 2 डॉलर होती थी.

समय के साथ यह स्पष्ट हो गया कि खनन का काम हर किसी के बस की बात नहीं थी. कुछ खनिकों ने एक दिन की मेहनत के बाद हार मान ली. दूसरों ने काम छोड़ने से पहले महीनों खाली पेट, फफोले हाथों और कुचली हुई उंगलियों को सहन किया.

हालाँकि, ये लोग अभी भी अपनी रोज़ी-रोटी के लिए कुछ कर सकते थे. कुछ संदेशवाहक बन गए. वे व्यस्त खनिकों के एक पत्र को मेल करने के लिए पचास सेंट, और सैन फ्रांसिस्को से चिट्ठी लाने के लिए 2 डॉलर का शुल्क लेते थे. शिविरों में कुछ महिलाएं प्रतिदिन 30 डॉलर की दिहाड़ी पर खाना बनाती थीं. और एक पूर्व खनिक ने एक जुए-घर में वायलिन बजाकर प्रतिदिन 14 डॉलर कमाए.



लेकिन अधिकांश खनिकों ने अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी के लिए भी सोने की खुदाई नहीं छोड़ी. 1849 की शुरुआत में उनमें 6,000 थे, और अंत तक दसियों हज़ार अधिक थे. प्रत्येक अपनी अच्छी तकदीर आजमा रहा था जिससे वो मालामाल बन जाए और फिर एक हीरो जैसे घर वापस लौटे.





4

धूल जमती है

1848 के खनिकों को कैलिफोर्निया की पहाड़ियों काफी अच्छी लगने लगीं. उनकी ज़रूरतें कम थीं, और वहां खुदाई के लिए पर्याप्त सोना था. डकैती और झगड़े-फसाद नहीं थे. जब सर्दी आती, तब खनिक अपनी जमा बचत-पूंजी को सैन फ्रांसिस्को में बैंकों में जमा कर देते थे.

1850 तक, वहां तेज़ी से परिवर्तन हुआ. सैन फ्रांसिस्को में 1849 में, 600 नई इमारतों का निर्माण हुआ, और उसकी जनसंख्या 1852 तक बढ़कर 34,000 हो गई, जो वाशिंगटन, डी.सी. से भी अधिक थी. ज़मीन का एक टुकड़ा जो कभी 16 डॉलर में बिका था, उसकी कीमत अब 15,000 डॉलर थी. शहर में रहने वाला अब हर खनिक सतर्क था और हर मुसीबत के लिए तैयार रहता था.

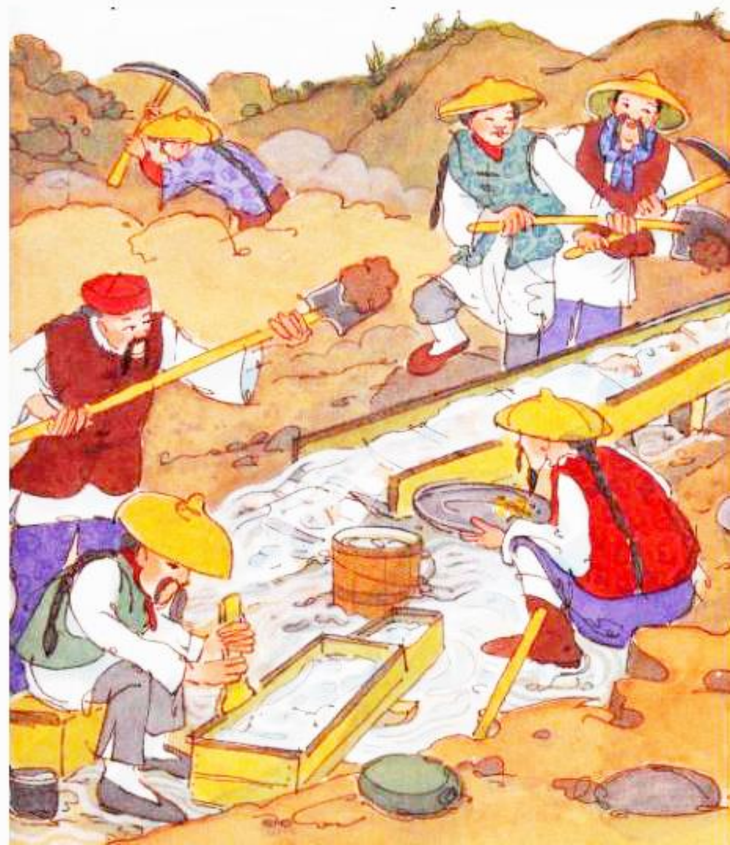
फिर तस्वीर बदली. शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता जब कोई मारा नहीं जाता और कोई डकैती नहीं होती.

1849 में, औसत खनिक प्रतिदिन 16 डॉलर कमाता था. 1850 में, यह कमाई आधी हो गई. खदानें और शहर, वैसे तो सोने की सफलता पर बने थे, लेकिन वे गरीब और हताश लोगों से भरे हुए थे.

सोने की हड़ताल की खबर ने यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, चीन और दक्षिण अमेरिका से दुनिया भर के खनिकों को आकर्षित किया. अधिकांश चीनी, दक्षिणी चीन से आए, जहां फसलें खराब हो गई थीं और नौकरियां बहुत कम थीं. चीनियों ने कैलिफोर्निया को "गम शान", यानि "सोने का पहाड़" के रूप में वर्णित किया. वो किसी भूखे किसान के लिए, आशा की भूमि थी.

कुछ लोगों को वहां बहुत कम आशा की उम्मीद थी. सैकड़ों येलसुमनी और अन्य मूल इंडियन जनजातियों के सदस्य, जो बहुत पहले से वहां की पहाड़ियों में रहते थे, उन्हें एक तरफ धकेल दिया गया था.

लेकिन जिस किसी की त्वचा गोरी नहीं थी, या जो अजीब लहजे में अंग्रेजी बोलता था, उसके साथ वहां पर बुरा व्यवहार किया जाता था. उन्हें विशेष करों का भुगतान करना पड़ता था और वे जहां चाहते, उन्हें वहां खुदाई करने की छूट नहीं थी. कुछ नए शहरों ने इन खनिकों को दूर रखने के लिए संकेत भी पोस्ट किए थे.



सरकार को आगे आना चाहिए था, लेकिन उस समय वहां ज्यादा सरकार थी ही नहीं. वहां कोई पुलिस नहीं थी, और बहुत कम कानून थे. सेना, अपने सैनिकों तक को, सोने की खुदाई करने से रोक नहीं पा रही थी. कुछ न्यायाधीश और महापौर - जिन्होंने मैक्सिकन शासन के दिनों से अपने पदों को बरकरार रखा था, ग्रामीण इलाकों में बिखरे हुए थे. हालाँकि, उनकी शक्ति सीमित थी.

खनन शिविरों में सबसे गंभीर अपराध दावा-कूदना था. उसके बाद हत्याएं थीं. संदिग्ध के पकड़े जाने के बाद, एक न्यायाधीश और जूरी को चुना जाता था, जो आमतौर पर खनिक ही होते थे. एक त्वरित ट्रायल आयोजित किया जाता था. चूंकि कोई जेल नहीं थी, इसलिए जिन लोगों को दोषी ठहराया जाता था, उन्हें एक ही बार में दंडित किया जाता था. एक जिद्दी चोर, जिसने यह बताने से इनकार किया कि उसने चोरी की सोने की बोरी कहाँ छिपाई थी, को नंगे पीठ एक पेड़ से बांध दिया गया. तीन घंटे तक मच्छरों के काटने के बाद, उसने आखिरकार सही बात बताई.

लेकिन यह कठोर न्याय भी अलग-अलग लोगों के लिए भिन्न था. यदि कोई अमेरिकी खच्चर चुराता, तो उसे कोड़े मार कर छोड़ दिया जाता था. यदि कोई मैक्सिकन खच्चर चुराता, तो उसे बिना किसी सबूत के फांसी पर लटका दिया जाता था.

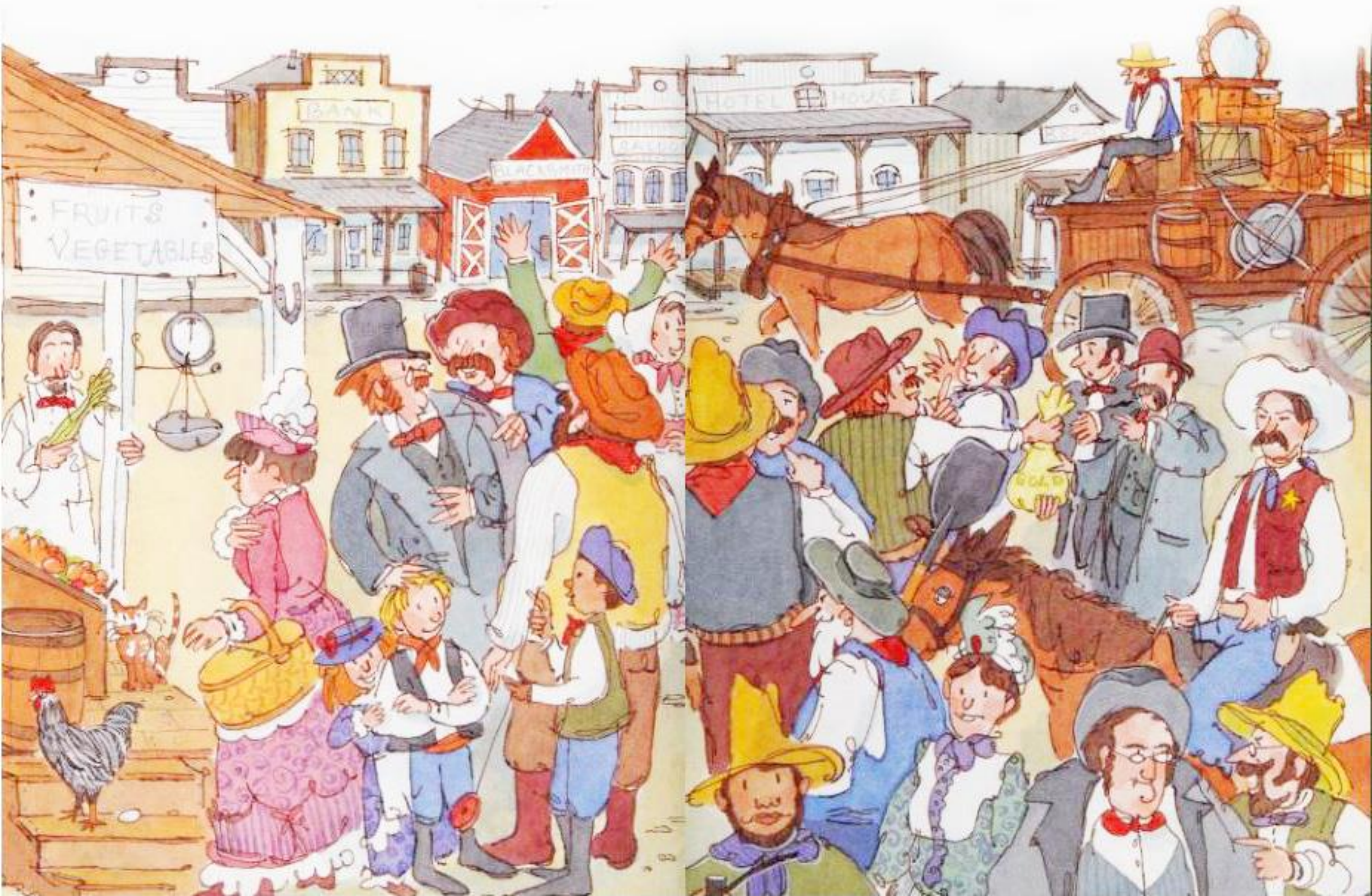
सैन फ्रांसिस्को में, ऑस्ट्रेलिया के "सिडनी डक" नामक स्ट्रीट गैंग, लोगों को आतंकित करते थे. जुलाई, 1849 में, उन्होंने चिली के एक पड़ोस पर हमला किया और लूटपाट की. उसमें कई लोगों की मौत हो गई और दर्जनों लोग घायल हो गए.

फिर धीरे-धीरे चीजें बदलने लगीं. 1849 के अंत में, एक राज्यपाल चुना गया और एक संविधान पारित किया गया. एक साल से भी कम समय के बाद, 9 सितंबर, 1850 को, कैलिफोर्निया का क्षेत्र आधिकारिक तौर पर एक राज्य बन गया.

नए राज्य की जनसंख्या 92,000 थी. उसकी भविष्य की राजधानी, सैक्रामेंटो सिटी, जो दो साल पहले तक अस्तित्व में नहीं थी, अब फलफूल रही थी.

एक आगंतुक सैक्रामेंटो में एक लंबी झपकी ले सकता था और जागने के बाद अपने सामने एक नई इमारत को खड़े देख सकता था!

कानून हर दिन बदलते प्रतीत होते थे. और जब लोग किसी सौदे को पक्का करने के बाद हाथ मिलाते, तो बाद में अपनी उँगलियाँ ज़रूर गिनते थे, यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनकी कोई उंगली गायब तो नहीं हो गई थी.



इस बीच, खनन का काम और अधिक व्यवस्थित हो गया. 1851 तक, लोगों की टीमें, नदियों पर बाँध निर्माण कर रही थीं जिससे वो नदी के तलों को खोद सकें. अन्य समूह पहाड़ियों में सुरंग खोद रहे थे.

खनन एक बड़ा व्यवसाय बनता जा रहा था. हजारों अकेले खनिक अभी भी नदी के किनारों पर खुदाई कर रहे थे, और अपने टिन के बर्तनों में रेत छांट रहे थे. उन्हें यह नहीं पता था, लेकिन उनके महान दिन अब बीत चुके थे.





5

देश आगे बढ़ता है

1850 के बाद भी, हर साल हजारों लोग सोने की तलाश में कैलिफोर्निया पहुंचे. फिर वे वहीं बस गए चाहे उन्हें सोना मिला या नहीं. कैलिफ़ोर्निया में जीवन रोमांचक था, और असफल खनिक भी, उस जीवन को छोड़ना नहीं चाहते थे.

सैन फ्रांसिस्को शहर कई बड़ी आगों से बचा, और उसने अपना तेज़ गति से पुनर्निर्माण किया. 1850 के दशक के दौरान, ग्रेनाइट और ईंट ने, धीरे-धीरे लकड़ी की इमारतों की जगह ली. खाड़ी में भी पत्थरों के बने ठोस घाट फैल गए.

कुछ लोगों को लगा कि वे खनिकों से भी उतना ही पैसा कमा सकते थे जितना खदानों से. चार्ल्स क्रोकर ने सैक्रामेंटो में, एक जनरल स्टोर से शुरुआत की और वो कैलिफोर्निया के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक बन गया.

कोलिस हंटिंगटन ने सैक्रामेंटो में खनिकों को फावड़े बेचे, मार्क हॉपकिंस ने उन्हें हार्डवेयर सप्लाई किया, और फिर दोनों लोगों ने व्यापार, अचल संपत्ति और परिवहन के जरिए भरपूर पैसा कमाया.

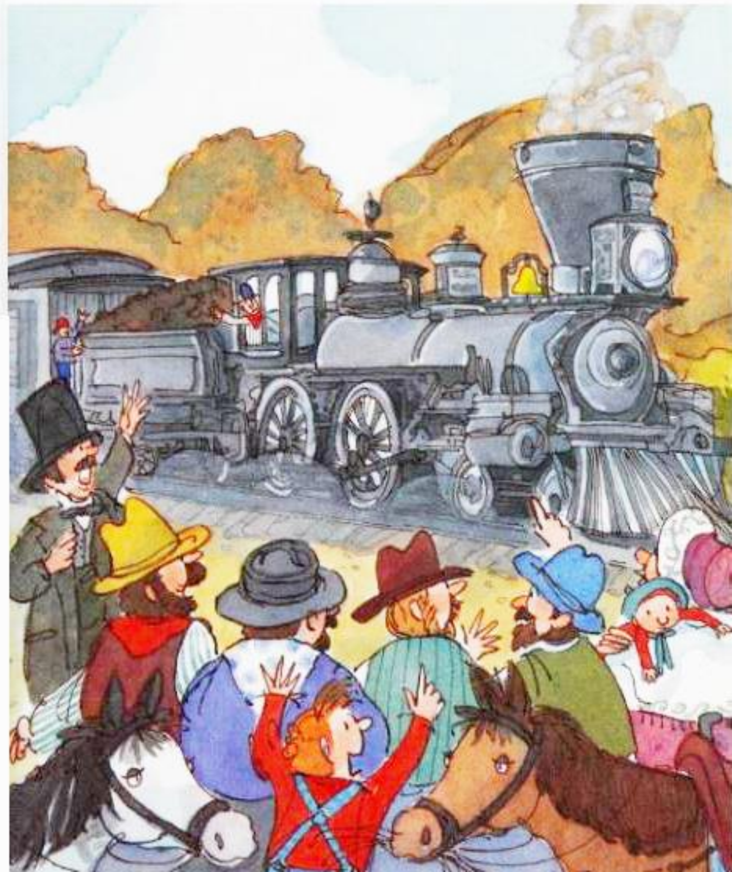
इस बीच, न्यू यॉर्क का एक बर्तन सप्लायर, मोटे तम्बू के कपड़े के शिपमेंट के साथ पश्चिम आया. उसका नाम लेवी स्ट्रॉस था.

टेंट का बाजार अब ख़त्म हो रहा था, इसलिए स्ट्रॉस ने अपने कैनवास को मजबूत डेनिम पैंट में बदल दिया और उन्हें सस्ते में 1 डॉलर में बेंचा. 1860 के दशक तक, सैकड़ों लोगों ने लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी के लिए काम किया, और वो एक वर्ष में हजारों पैंट और वर्क शर्ट बनाने लगा.





पश्चिम का यह इलाका अपेक्षा से अधिक तेजी से खुल रहा था. 1869 में, एक नए रेलमार्ग ने देश के पूर्वी और पश्चिमी तटों को जोड़ा. इस यात्रा में केवल एक सप्ताह का समय लगता था - बीस साल पहले इतनी तेज़ गति की कोई कल्पना तक नहीं कर सकता था.



1850 में, कैलिफोर्निया में, 1,500 से भी कम किसान थे. कैलीफ़ोर्नियावासी अपना अधिकांश भोजन - आटा, चिली से आयात करते थे और हवाई द्वीप से सब्जियां मंगाते थे. पूर्व के किसानों को, कैलिफ़ोर्निया की बढ़ती मांग के साथ तालमेल बिठाने में कुछ समय लगा. लेकिन उन्होंने तेजी से सीखा. 1860 तक, वहां 20,000 किसान थे, और अब खेती के लिए अधिक-से-अधिक भूमि का उपयोग किया जा रहा था.



जैसा कि पूर्व "फोर्टी-नाइनर्स" निवासी बसे, अधिकांश ने यह महसूस किया कि उन्होंने कभी भी वो कमाई नहीं की, जिसकी उन्हें आशा थी. अपनी खोज से जेम्स मार्शल और न ही जॉन सटर कभी समृद्ध हुए. मार्शल को फिर कभी भी सोना नहीं मिला, और अंत में वो एक गरीब लोहार बन गया.



इस बीच, सटर ने खूब कमाई की और गंवाई. अंत में वो पूर्व में वापिस चला गया और पेंसिल्वेनिया में उसने अपने अंतिम साल बिताए.

लेकिन वे सफल हुए हों या नहीं, सभी खनिकों में एक बात समान थी. शहरवासियों से लेकर पहाड़ियों पर रहने वाले प्रत्येक आदमी ने, वास्तव में इस अमेरिकी साहसिक अभियान में एक रंगीन भूमिका निभाई थी.



समाप्त